

वैश्वीकरण और बदलते परिदृश्य में संयुक्त परिवार का अध्ययन

Daya Shankar^{1*}, Dr. Dharmendra Kumar Sonker²

¹ Assistant Professor, Ratan Sen Degree College, Siddharth University Kapilavastu Siddharth Nagar.U.P, India

Email: pdayashankar848@gmail.com.

² Professor, Siddharth University Kapilavastu Siddharth Nagar U.P., India

सार - वैश्वीकरण अपने शाब्दिक अर्थ में स्थानीय या क्षेत्रीय चीजों या घटनाओं को वैश्विक में बदलने की प्रक्रिया है। इसका उपयोग उस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता है जिसके द्वारा दुनिया के लोग एक समाज में एकीकृत होते हैं और एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। पारंपरिक मूल्य महत्व खो रहे थे और समाज में नई सोच, नए मूल्य जुड़ रहे थे। आधुनिक युग में पुरुष और महिला को समान माना जाएगा। गांव के लोगों के स्वास्थ्य क्षेत्र की सेवा के लिए नई स्वास्थ्य उपचार और सुविधाएं खोली गईं। सभी व्यक्तियों को समाज में समान अवसर दिए गए। हमारे देश में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण गांव के लोगों की जीवन शैली, परिवार की संरचना बदल गई है। एक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण तकनीकी, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक आदि जैसे विभिन्न कारकों का परिणाम है समाज के अंग में परिवर्तन के परिणामस्वरूप अन्य संस्थाएँ भी बदलती हैं। एक मूलभूत इकाई के रूप में परिवार ने समय के साथ नाटकीय परिवर्तन देखे हैं। ग्रामीण बस्तियों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप हमारे देश में संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवर्तन हुआ है। पूरी दुनिया में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण परिवार की संरचना, आकार, अधिकार में परिवर्तन हो रहा है। हमारे देश में, अधिकांश आबादी अभी भी ग्रामीण इलाकों में रहती है, लेकिन देश के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में परिवार प्रणाली बदल गई है। प्रस्तुत आलेख सिद्धार्थनगर में परिवार प्रणाली में हुए प्रमुख परिवर्तनों पर प्रकाश डालेगा।

कीवर्ड: पारिवारिक संरचना, एकल परिवार, संयुक्त परिवार, वैश्वीकरण और शहरीकरण

----- X -----

परिचय

सिद्धार्थ नगर में बहुसंख्यक आबादी के हिंदू धर्म से इस्लाम में धर्मांतरण के बाद परिवार व्यवस्था में नाटकीय बदलाव नहीं आया। हिंदू सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था में जो संयुक्त परिवार प्रणाली हावी थी, वह सदियों तक चलती रही और आज भी समाज में प्रचलित है। ऐतिहासिक ग्रंथों से यह स्पष्ट है कि सिद्धार्थ नगर की घाटी सदियों से विदेशी शासकों के अधीन रही है, जिन्होंने स्थानीय लोगों को बेगार करने के लिए मजबूर किया। परिवार के मुखिया (पिता) को अपने बेटों में से एक को दूर के क्षेत्रों में बेगार के लिए भेजना पड़ता था। कई पुरुष सदस्यों वाला परिवार अपने सबसे मजबूत बेटे को भेजता था क्योंकि वह कठोर कामकाजी

परिस्थितियों में जीवित रह सकता था और वापस लौट सकता था, कमजोर बेटे रास्ते में ही मर सकते थे। घाटी की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त परिवार प्रणाली आम थी क्योंकि यह परिवार के सदस्यों को जीवन की सुरक्षा प्रदान करती थी।

घाटी में जलवायु और राजनीतिक परिस्थितियाँ स्थायी जीवन के आरंभ से ही नाजुक रही हैं। कड़ाके की सर्दियों, खराब सड़क संपर्क, कम कृषि उत्पादकता के साथ संयुक्त परिवार प्रणाली ने उन्हें कार्यबल प्रदान किया, जो सामूहिक रूप से पूरे परिवार के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ करेंगे। पारिवारिक मूल्यों में नैतिकता और आचार-विचार को महत्व दिया जाता था। परिवार का प्राथमिक कार्य

व्यक्ति का समाजीकरण करना है और संयुक्त परिवार में बच्चे को चाचा, चाची और दादा-दादी का प्यार मिलता था और साथ ही माता-पिता उसके आचरण की कड़ाई से जाँच करते थे। इस संरचना में बच्चे के पालन-पोषण में दादा-दादी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण थी। सिद्धार्थनगर के पारंपरिक संयुक्त परिवारों में माता-पिता अक्सर कृषि-संबंधी कार्यों में व्यस्त रहते थे, बच्चों की जिम्मेदारी दादा-दादी पर होती थी। दादी की भूमिका अधिक दिखाई देती है, वह हमेशा अपने पोते-पोतियों के लिए लोरियाँ और पालने के गीत गाती रहती देसाई ने अपनी प्रसिद्ध रचना, महुवा में परिवार के कुछ पहलू (1964) में परिवार की संरचना को व्यक्ति के कार्य के प्रति झुकाव के संदर्भ में परिभाषित किया है। जब कार्य पति, पत्नी और बच्चों की ओर उन्मुख होता है, तो परिवार को एकल इकाई के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है; और जब कार्य एक व्यापक समूह की ओर उन्मुख होता है, तो इसे संयुक्त परिवार के रूप में परिभाषित किया जाता है।

परिवार समाज की आधारभूत और महत्वपूर्ण इकाई है क्योंकि यह मानव पूंजी संसाधनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इसमें व्यक्ति, परिवार और समुदाय के व्यवहार को प्रभावित करने की शक्ति निहित है। इसलिए, यह अधिकांश सामाजिक विज्ञान विषयों में अध्ययन की एक आधारभूत इकाई है। अर्थव्यवस्था के बढ़ते व्यावसायीकरण और आधुनिक राज्य के बुनियादी ढांचे के विकास ने भारत में पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। विशेष रूप से, पिछले कुछ दशकों में पारिवारिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। यह शोधपत्र भारतीय पारिवारिक संरचना पर विभिन्न योगदान कारकों के प्रभाव की आलोचनात्मक जांच करता है। हमें अपने सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के पोषण और संरक्षण के लिए हमारी संयुक्त परिवार प्रणाली द्वारा निभाई गई भूमिका को संजोना चाहिए। मानव सभ्यता के विकास के बाद से, परिवर्तन हर समाज का एक सुसंगत हिस्सा रहा है, हालांकि इसकी स्थिति और दिशाओं में भिन्नताएं रही हैं। विकास के विभिन्न चरणों में, परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है। आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, शहरीकरण और संस्कृतिकरण जैसी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने समाज को बदलने में बहुत योगदान दिया है। 90 के दशक में आर्थिक क्षेत्र में उदारीकरण की नीति के फलस्वरूप राष्ट्रों के बीच लगातार आदान-प्रदान तथा आयात-निर्यात में भारी वृद्धि हुई तथा संचार के विभिन्न साधनों के विकास ने राष्ट्रों के बीच सामाजिक आदान-प्रदान को संभव और आसान बना दिया।

वैश्वीकरण के रूप में परिभाषित इन सामाजिक संपर्कों ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित किया है। समाज की प्राथमिक इकाई और समाजीकरण का प्राथमिक स्रोत परिवार है। वैश्वीकरण के प्रभावों से परिवार भी प्रभावित हुआ है। हालांकि यह सच है कि औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण जैसी प्रक्रियाओं ने शुरुआती वर्षों में परिवार की पारंपरिक संरचना को प्रभावित किया है, लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय ग्रामीण समाज में तेजी से बदलाव हुए हैं, जो वैश्वीकरण और सूचना क्रांति के साथ-साथ अन्य सामाजिक परिवर्तनों से भी गुजरा है। वैश्वीकरण एक ऐसे समाज के उद्भव की अवधारणा है जो वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित है। वैश्वीकरण जनता के बीच विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं का परिणाम है।

संयुक्त परिवार के टूटने का प्रभाव

ग्रामीण परिवार की संरचना में आए बदलाव ने परिवार के सदस्यों की स्थिति और भूमिका को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार में बदलते परिदृश्य के साथ ही मुखिया का महत्व कम होता जा रहा है। परंपरागत रूप से परिवार में पुरुष बुजुर्गों के पास अधिकार होता था। जब परिवार छोटी-छोटी इकाइयों में बंट जाता है, तो वहां नए अधिकार केंद्र बनते हैं, जिनमें प्रत्येक इकाई का मुखिया संबंधित सबसे बड़ा पुरुष सदस्य होता है। शिक्षित और व्यक्तिवादी युवा पीढ़ी भी मुखिया के अधिकार को चुनौती दे रही है। स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद के आधुनिक विचारों से परिचित युवा पुरुष पारंपरिक अधिकार के प्रति नाराजगी दिखाते हैं। संयुक्त परिवार में विभाजन के बाद, कई युवतियां सास के वर्चस्व वाले रवैये को भी चुनौती देती हैं। इसी तरह, कई पारंपरिक सासों को भी बहुओं में बढ़ते असंगत व्यक्तिवाद के कारण असहज स्थिति का सामना करना पड़ता है। संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने से परिवार में वृद्ध, विधवा, विधुर और अन्य आश्रितों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई विधवाएं, विधुर, बच्चे और यहां तक कि वृद्ध दंपति भी भिखारी बन जाते हैं। कई लोग अपनी सामाजिक सुरक्षा और मानसिक शांति के अंतिम उपाय के रूप में तीर्थस्थलों के आसपास स्थित वृद्धजन केंद्रों की ओर रुख करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

रानी, पूजा और कौर, अमन। (2023). सार भारतीय समाज और संस्कृति परिवार के कारण अधिक स्थिर हो गई है। परिवार की संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन की प्रवृत्ति देखी गई है। परिवर्तन तब तक महत्वपूर्ण है, जब

तक कि यह मूल्य, संस्कृति और सामाजिक परिवेश को नष्ट न कर दे। विवाह के पैटर्न, परिवार की संरचना, पितृसत्तात्मक समाज, महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन हुए हैं। यह अध्ययन एनएफएचएस सर्वेक्षण के विभिन्न दौरों, आईओएम रिपोर्ट और विभिन्न शोध पत्रों पर आधारित है जो भारतीय परिवार प्रणाली के बदलते रुझानों के बारे में डेटा प्रदान करते हैं। इसलिए, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रणाली में होने वाले परिवर्तन को समझने की आवश्यकता है।

गोपालकृष्णन, करुणानिधि. (2021).स्वतंत्रता-पूर्व भारत में जीवन-व्यवस्था का प्रमुख प्रकार संयुक्त परिवार प्रणाली थी। यह सामूहिकता और दान की धारणा पर आधारित थी। यह न केवल सामाजिक मूल्यों के पोषण और संरक्षण के लिए बल्कि उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने के लिए भी एक सेवा स्थल था। औद्योगीकरण के आगमन और उसके बाद शहरीकरण और आधुनिकीकरण के उद्भव के बाद, संयुक्त परिवार एकल परिवारों में विघटित होने लगे। आधुनिक एकल परिवार संयुक्त परिवार में गहराई से निहित सामूहिकता के मूल्य के विपरीत व्यक्तिवाद या स्वतंत्रता के सिद्धांत को निरंतर बढ़ावा दे रहा है। इसलिए, यह सामूहिकता से व्यक्तिवाद की ओर परिवार में मूल्य परिवर्तन है। इसके बाद परिवार में वंशगत संबंधों से वैवाहिक संबंधों की ओर निष्ठा का परिवर्तन होता है। परिणामस्वरूप, एकल परिवार समकालीन भारतीय समाज में एक अपरिहार्य सामाजिक इकाई बन गया है। हालाँकि, वर्तमान युवा पीढ़ी के जीवन में पूर्ण स्वतंत्रता की ओर झुकाव के कारण इसकी स्थिरता शायद दूर के भविष्य में अनिश्चित हो सकती है। संभवतः इसका परिणाम दूर के भविष्य में लोगों की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक नए प्रकार की जीवन व्यवस्था के उद्भव के रूप में हो सकता है।

एसपी, राजीव. (2019).परिवार आधारित सामाजिक कार्य व्यक्तियों और समूहों के लिए सामाजिक कार्य हस्तक्षेपों में सबसे आगे रहा है। पिछली शताब्दी के दौरान विवाह और परिवार की संस्थाओं में जबरदस्त बदलाव हुए। सभी प्रकार के परिवर्तनों के बीच, परिवार कमजोरियों से लड़ने का एक महत्वपूर्ण स्रोत बने हुए हैं, और इसलिए यह सामाजिक कार्य और सामाजिक कल्याण में हस्तक्षेप का केंद्र बिंदु है। परिवारों द्वारा सामना की जाने वाली जरूरतें और चुनौतियाँ दुनिया भर में अलग-अलग हैं। भारत में भी, पेशेवर सहायता की माँग अलग-अलग है। यह पत्र भारत में विवाह और परिवार प्रणाली के रुझानों पर प्रकाश डालता है और इस प्रकार अन्य वैश्विक सामाजिक कार्य सेटिंग्स में उपलब्ध पेशेवर सेवाओं की तुलना में आवश्यक नए सामाजिक कार्य

दृष्टिकोण और रणनीतियों की ओर इशारा करता है। यह पत्र ऑस्ट्रेलियाई संदर्भ में अपनाई गई कुछ रणनीतियों पर भी प्रकाश डालता है जो पेशेवर दृष्टिकोणों के साथ फिट बैठती हैं।

भसीन, हिमानी. (2016).संस्कृति और एकता की भूमि भारत में, संस्कृति और एकता समाज की संरचना में, वास्तव में समाज की छोटी इकाई यानी परिवार में अच्छी तरह से अभिव्यक्त होती है। एक परिवार एक दूसरे से गैर-पेशेवर तरीके से जुड़े हुए मनुष्यों का एक समूह है, जो परिवार के भीतर एक ठोस सामंजस्य को जन्म देता है। प्यार, देखभाल और स्नेह सबसे प्रमुख मानवीय मूल्य हैं, जो एक परिवार के भीतर रिश्तों के इन बंधनों को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। आम तौर पर, एक एकल परिवार को एक जोड़े, बच्चों, दादा-दादी और पालतू जानवरों से मिलकर एक इकाई के रूप में माना जा सकता है। हालाँकि, भारत में एक विशेष प्रकार की पारिवारिक संरचना मौजूद है जो वास्तव में मानवीय संबंधों को संभालने और बनाए रखने के तरीके में काफी ज्वलंत है। इस विशेष प्रकार की पारिवारिक संरचना संयुक्त परिवार प्रणाली है। एक संयुक्त परिवार एक से अधिक एकल परिवारों का संग्रह है जो रक्त संबंधों या वैवाहिक संबंधों से जुड़े होते हैं। सभी सदस्य, चाहे वे किसी भी विशेष एकल परिवार (उस संयुक्त परिवार के भीतर) से संबंधित हों, एक साथ रहते हैं और खुशी, दुख और लगभग हर तरह की समस्या और खुशी एक साथ साझा करते हैं। संयुक्त परिवार अपने आप में हमारे बहु-सांस्कृतिक, बहुभाषी, फिर भी आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े भारतीय समाज का एक विशिष्ट दृश्य प्रस्तुत करता है।

शेइदु अब्दुलकरीम, हारुना और बाबा, यूसुफ। (2022).परिवार के समाजशास्त्र का विषय परिवार का समाजशास्त्र के विषय की शाखाओं या उप-क्षेत्रों में से एक है जो रिश्तेदारी संबंधों के गठन, रखरखाव, विकास, संरचना और कार्य और विघटन की समझ से संबंधित है। परिवार का समाजशास्त्र प्रतिमान से परिवार को समाज में सामाजिक संस्थाओं और समाजीकरण की इकाइयों में से एक के रूप में देखता है। यह समाजशास्त्र की एक शाखा है जो सामाजिक जीवन की एक केंद्रीय संस्था के रूप में परिवार के विश्लेषण और समझ के लिए समर्पित है। इसलिए समाजशास्त्र का यह उप-क्षेत्र परिवारों के बीच पैटर्न वाले सामाजिक संबंधों और समूह की गतिशीलता के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका

के कारण तृतीयक संस्थानों के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनता है।

अनुसंधान क्रियाविधि

संबंधित ब्लॉकों से सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधि के माध्यम से तीन सौ उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। अध्ययन अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध डिजाइन पर आधारित है। शोध मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित था, जो साक्षात्कार अनुसूची और सहभागी अवलोकन विधियों के माध्यम से एकत्र किया गया था। द्वितीयक डेटा का उपयोग परिवार के प्राचीन पैटर्न का पता लगाने और वर्तमान परिदृश्य के साथ सहसंबंधित करने के लिए भी किया गया था। सभी 300 उत्तरदाता (पुरुष और महिला) अपने-अपने परिवारों के मुखिया थे। यह अध्ययन अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध डिजाइन पर आधारित था। शोध का मुख्य आधार प्राथमिक डेटा था, जो प्रतिभागी अवलोकन और साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्र किया गया था। इस शोध में, आवश्यक तथ्यों के संग्रह के लिए द्वितीयक आंकड़ों का भी उपयोग किया गया था, परिवार संरचना में परिवर्तन के दो प्रमुख पहलुओं को शोध करते समय ध्यान में रखा गया था (क) परिवार संरचना में परिवर्तन परिवार संरचना के पहले पहलू में परिवर्तन को निम्नलिखित बिंदु द्वारा स्पष्ट किया गया है: परिवार की संरचना में परिवर्तन आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण, परिवार की संरचना में निश्चित परिवर्तन हुआ है और परिवार की मूल संरचना में परिवर्तन हो रहा है। एकल परिवार फैशन बन गया है और संयुक्त परिवार प्रणाली का स्थान ले रहा है। पहले, इस गाँव समुदाय में संयुक्त परिवार प्रणाली बहुत प्रचलित थी। लेकिन युवा पीढ़ी में एकल परिवार प्रणाली बड़े पैमाने पर प्रचलित है।

विक्षेपण

परिवार का प्रकार

परिवार हर आधुनिक समाज में बुनियादी संस्था है। यहाँ देश के इस हिस्से में विभाजन और अलगाव को आम तौर पर ग्रामीण लोगों के बीच माता-पिता के प्रति अनादर के रूप में देखा जाता है, हालाँकि यह कारक शहरी और उच्च जातियों के बीच नहीं देखा जाता है। परिवार की संरचना चक्रीय प्रकृति की होती है, जैसे एकल से संयुक्त और फिर एकल। इसका विवरण अगले अध्याय में चर्चा की जाएगी। नीचे दी गई तालिका उत्तरदाताओं के परिवार के प्रकार को दिखाएगी:

तालिका 1: परिवार के प्रकार के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

परिवार का प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
नाभिकीय	163	54.33%
संयुक्त परिवार	137	45.66%
कुल	300	100

ऊपर दी गई तालिका से पता चलता है कि लगभग 54.33% उत्तरदाता एकल परिवार में रहते हैं और 45.66% संयुक्त परिवार में। दोनों में परिवार का मुखिया पुरुष होता है और इसलिए व्यवस्था पितृसत्तात्मक, पुरुष-प्रधान होती है। लेकिन माँ और पत्नी के रूप में महिला की स्थिति दोनों ही संरचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। महिला अब परिवार की निष्क्रिय सदस्य नहीं है, वे शिक्षित हैं और अधिकांश मामलों में उनकी इच्छा को महत्व दिया जाता है। हालाँकि, पृथ्वी के अधिकांश लोगों के बीच, एकल परिवार एक अणु में परमाणुओं की तरह बड़े समुच्चय में संयोजित होते हैं। पिता की मृत्यु के बाद बड़ा भाई अपने भाइयों और बहनों के लिए पिता की तरह व्यवहार करता है।

संयुक्त परिवार में झगड़े

सिद्धार्थनगर घाटी में मुसलमानों के बीच पारिवारिक व्यवस्था की एक खासियत यह है कि इसमें झगड़े बढ़ते हैं जो आम तौर पर परिवार में बहू के आने के बाद शुरू होते हैं। और अगर परिवार में दो या दो से ज़्यादा बहूएँ हों तो स्थिति और भी खराब हो जाती है। समाज में परिवार की महिला सदस्यों के बीच लालची रिश्ते होते हैं जैसे दुल्हन का सास से रिश्ता, दुल्हन का ननद से रिश्ता और सबसे ज़्यादा विनाशकारी रिश्ता एक खास परिवार की पत्नियों के बीच होता है जो अक्सर परिवार के विभाजन का कारण बनता है। घाटी में संयुक्त परिवार व्यवस्था के टूटने का एक बड़ा कारण परिवार में तनाव है। पारंपरिक लोक साहित्य हमें सिद्धार्थनगरी संयुक्त परिवार में विवश संबंधों का सजीव वर्णन देता है। एक बार जब माता-पिता अपने बेटे की शादी की प्रक्रिया शुरू करते हैं, तो उसे माता-पिता और परिवार के दूसरे सदस्यों द्वारा सलाह दी जाती है कि उसे अपनी पत्नी की सभी माँगों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। सास (हेश) आमतौर पर अपनी बहू

(नोश) से बहुत ईर्ष्या करती है, जो सोचती है कि वह अपने परिवार को स्थापित करेगी और परिवार में अपना स्थान बनाएगी। वह बहू (नोश) को चिढ़ाना और उसकी आलोचना करना अपना अधिकार समझती है। सास अपने बेटे को विश्वास में लेने के बाद अपनी बहू पर हमला करेगी और उसे प्रताड़ित करेगी। इस प्रक्रिया में बहू अपने ससुराल को छोड़ देगी और परिवार में तनाव परिवार के विभाजन तक पहुंच जाएगा। कभी-कभी पत्नी अपने पति को वश में करने के बाद अपनी सास पर जवाबी हमला करती है, जिससे परिवार में कलह होती है। जहां आधुनिक कारक जैसे प्रौद्योगिकी और जीवन स्तर में सुधार ने घाटी में एकल परिवार प्रणाली के विस्तार को बढ़ावा दिया है, वहीं परिवारों के भीतर घरेलू हिंसा और कलह भी पारंपरिक परिवार प्रणाली के विघटन का कारण बन रहे हैं। इसके अलावा संयुक्त परिवार प्रणाली अभी भी समाज में पाई जाती है और आधुनिकीकरण के झटकों से बची हुई है। सर्वेक्षण के दौरान, उत्तरदाताओं से संयुक्त परिवार प्रणाली के महत्व के बारे में उनकी राय जानने के लिए कहा गया था। नीचे दी गई तालिका इस प्रश्न पर उत्तरदाताओं के उत्तरों को दर्शाती है कि क्या संयुक्त परिवार प्रणाली अभी भी समाज में महत्व रखती है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं का वितरण जिस पर तेजी से बढ़ती पारिवारिक प्रणाली है

परिवार	आवृत्ति	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	111	37
एकल परिवार	189	63
कुल	300	100

एक सामान्य एकल परिवार में एक विवाहित पुरुष और महिला अपने बच्चों के साथ होते हैं, हालांकि व्यक्तिगत मामलों में उनके साथ एक या एक से अधिक अतिरिक्त व्यक्ति रह सकते हैं। एकल परिवार सार्वभौमिक है और दुनिया भर में मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में प्रचलित है। एकल परिवार में, पुरुष और उसकी पत्नी अपने बच्चों के साथ परिवार के माहौल में अपने माता-पिता के माध्यम से समूह में रहते हुए प्राथमिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। एकल परिवार में भावनात्मक बंधन अधिक होते हैं क्योंकि बच्चे पूरी तरह से अपने माता-पिता पर निर्भर होते हैं। इस प्रकार के परिवार में माता-पिता उनके लिए मार्गदर्शक, शिक्षक और आदर्श के रूप में कार्य करते हैं। समाज में एकल परिवार प्रणाली के विकास के विभिन्न कारण हैं। नीचे दी

गई तालिका हमें सिद्धार्थनगर के मुसलमानों के बीच एकल परिवार के विकास के मुख्य कारणों का पता लगाने में मदद करेगी। लेकिन आधुनिक समय में लोग इसे इतना भारी नहीं मानते हैं कि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता और भाई-बहनों से अलग होकर एक नया परिवार बनाता है। दिलचस्प बात यह है कि कुछ सुशिक्षित और आधुनिक परिवार बच्चों के लिए पहले से ही एक घर बनाना पसंद करते हैं और एक बार जब वे शादी कर लेते हैं तो परिवार सामूहिक रूप से तय करता है कि कौन परिवार को छोड़कर नया घर लेगा।

यह समाज में एक रचनात्मक परिवर्तन है क्योंकि इससे परिवार के सदस्यों के बीच संघर्ष और झगड़े की दर कम हो जाती है। एकल परिवार सार्वभौमिक रूप से बढ़ रहे हैं और नव-स्थानीय निवास पारिवारिक संबंधों को कमजोर कर रहा है, लेकिन सिद्धार्थनगरी समाज के मामले में जो जोड़े अलग रहने का फैसला करते हैं उन्हें आम तौर पर मूल घर के करीब जमीन का एक टुकड़ा दिया जाएगा और वे वहां अपना घर बनाएंगे। इससे परिवारों को करीब रहने और किसी भी परिवार द्वारा सामना किए जाने वाले दुखों और अन्य गंभीर मुद्दों के मामलों में एक-दूसरे की मदद करने में मदद मिलती है। देश के बाकी हिस्सों और सिद्धार्थनगर में पाए जाने वाले आवास पैटर्न में अंतर है क्योंकि घाटी में कोई फ्लैट सिस्टम नहीं है जहां कई परिवार एक ही इमारत में रहेंगे। घाटी में कठोर सर्दियों की स्थिति और घाटी की स्थलाकृति से संबंधित देश के अन्य हिस्सों से घाटी में आवास पैटर्न काफी अलग है। नीचे दी गई तालिका समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली के विस्तार के कारणों को स्पष्ट करेगी।

तालिका 3: एकल परिवार के पक्ष में तर्क

एकल परिवार	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वतंत्रता	112	37.6
मजबूत रिश्ता	70	23.3
कम झगड़े	88	29.1
वित्तीय स्थिरता	20	6.8
कोई और	10	3.2
कुल	300	100

स्रोत: प्राथमिक डेटा

एकल परिवार प्रणाली के तेजी से विकास के लिए विभिन्न कारण जिम्मेदार थे। पारंपरिक संयुक्त परिवार अपना प्रभाव खो चुका है और एकल परिवार सामाजिक व्यवस्था पर हावी हो रहा है। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि लगभग 37% उत्तरदाताओं ने खुलासा किया कि एकल परिवार प्रणाली के विस्तार का मुख्य कारण इस प्रणाली में मिलने वाली स्वतंत्रता है। दंपति और उनके बच्चे अन्य सदस्यों के हस्तक्षेप के बिना, स्वतंत्रता के माहौल में रहते हैं। वे आम तौर पर अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए काम करते हैं; ज्यादातर पिता सारी मेहनत करते हैं और माँ घर की देखभाल करती हैं। तालिका से पता चलता है कि लगभग 23% उत्तरदाताओं की राय थी कि एकल परिवार में, सदस्यों के बीच रिश्ते और बंधन आम तौर पर मजबूत होते हैं क्योंकि ज्यादातर पति, पत्नी और उनके बच्चे मूल इकाई होते हैं। सर्वेक्षण के दौरान, उत्तरदाताओं द्वारा यह खुलासा किया गया कि संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन का एक मुख्य कारण किसी विशेष परिवार में महिलाओं के बीच संघर्ष है लगभग 29% उत्तरदाताओं की राय थी कि समाज में एकल परिवार के विस्तार के लिए अनुपस्थिति या कम झगड़े जिम्मेदार हैं। हालाँकि, इसके अलावा वित्तीय स्थिरता, इस प्रकार के परिवार में सदस्यों के लिए सफलता प्राप्त करने के लिए स्वस्थ व्यक्तिगत अवसर जैसे अन्य कारक भी हैं, विश्लेषण की गई तिथि के अनुसार लगभग 10% उत्तरदाताओं ने खुलासा किया कि वित्तीय स्थिरता, देखभाल, विकास और विकास, बच्चों के कैरियर के अवसर आदि जैसे कई अन्य कारक हैं जो समाज में एकल परिवार प्रणाली के विकास के लिए जिम्मेदार हैं। आर्थिक सहयोग न केवल पति-पत्नी को बांधता है; यह एकल परिवार के भीतर माता-पिता और बच्चों के बीच विभिन्न संबंधों को भी मजबूत करता है।

आधुनिकीकरण और परिवार प्रणाली पर इसका प्रभाव

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आधुनिकीकरण ने समाज के हर पहलू को प्रभावित किया है। लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव के साथ-साथ उनकी धारणाएँ भी बदली हैं। एक संस्था के रूप में परिवार ने व्यक्तियों को समाजीकरण करने और समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों और मानदंडों को अपनाने में मदद की है। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के कारकों ने परिवार प्रणाली में नाटकीय रूप से बदलाव किया है। आधुनिक समय में लोग तकनीक का उपयोग कर रहे हैं और इससे सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आया है। परिवार के सदस्य अब अपने सगे-संबंधियों से अधिक आसानी से जुड़ जाते हैं और अब उनके लिए दुनिया के दूसरे हिस्सों में

रहने वाले सदस्यों से जुड़ना आसान हो गया है। परिवार प्रणाली पर आधुनिकीकरण के प्रभावों के बारे में लोगों के विचार जानने के लिए अनुसूची में एक प्रश्न जोड़ा गया और नीचे दी गई तालिका में प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया।

तालिका 4: परिवार प्रणाली पर आधुनिकीकरण के प्रभावों पर उत्तरदाताओं का वितरण

जवाब	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	235	78.33
नहीं	65	21.66
कुल	300	100

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है, परिवार एक आवश्यक संस्था के रूप में भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित हुआ है। परम्परागत शक्ति एवं अधिकार परिवार के कई सदस्यों में विभाजित हो जाते हैं, जो पहले परिवार के मुखिया के पास होते थे। पहले एक बार परिवार अलग हो जाता था तो सदस्यों के बीच सम्पत्ति के बंटवारे को लेकर बहुत लम्बे समय तक अराजकता एवं संघर्ष की स्थिति बनी रहती थी, आज के सिद्धार्थनगर में ऐसे मुद्दे बहुत कम देखने को मिलते हैं। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि लगभग 78% उत्तरदाताओं ने बताया कि आधुनिकीकरण से परिवार की सम्पूर्ण संरचना प्रभावित हुई है, मकान बनाने का तरीका, रिश्तेदारों का आना-जाना, पड़ोसियों के व्यवहार में परिवर्तन तथा कई अन्य क्षेत्र आधुनिकीकरण से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। आधुनिकीकरण का प्रभाव शहरी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में धीमी गति से परिवर्तन देखने को मिलता है। उपरोक्त तालिका से यह भी पता चलता है कि लगभग 21.7% उत्तरदाताओं का मत है कि आधुनिकीकरण ने परिवार व्यवस्था को उस सीमा तक प्रभावित नहीं किया है, यद्यपि थोड़े बहुत परिवर्तन अवश्य हुए हैं, परन्तु ये सार्वभौमिक एवं स्वाभाविक हैं, क्योंकि प्रत्येक परिवर्तन आधुनिकीकरण का परिणाम नहीं है।

तालिका 5: यदि हाँ तो किस परिप्रेक्ष्य में?

परिप्रेक्ष्य	हाँ	नहीं
परिवार का आकार	94	46.80
पारिवारिक मानदंडों का कमजोर होना	47	23.40
स्वस्थ पारिवारिक रिश्ते	25	12.17
महिलाओं के लिए समान दर्जा	34	17.02
कुल	200	100

स्रोत: प्राथमिक डेटा से गणना

300 उत्तरदाताओं में से 235 उत्तरदाताओं ने कहा (हां) कि आधुनिकीकरण ने परिवार प्रणाली को प्रभावित किया है। ऐसे विभिन्न पहलू थे जिनमें परिवार प्रणाली में ये परिवर्तन और प्रभाव देखे गए। 235 उत्तरदाताओं में से 110, लगभग 47% ने खुलासा किया कि आधुनिकीकरण का प्रभाव परिवार के आकार, भूमिकाओं और जीवन शैली पर स्पष्ट है। घाटी में लोग अब दो से तीन बच्चों के साथ छोटे परिवार को पसंद करते हैं, जन्म नियंत्रण के आधुनिक साधनों और तकनीकों का उपयोग करते हैं। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि आधुनिकीकरण के साथ, अन्य रिश्तेदारों के साथ पारिवारिक संबंध कमजोर हो गए हैं और जो लोग पहले रिश्तेदारों से अधिक बार मिलते थे अब शायद ही कभी अपने रिश्तेदारों से मिलते हैं। आधुनिक उपकरणों और तकनीकों के साथ, एक-दूसरे से मिलने के संबंध में पारिवारिक संबंध कमजोर हो गए हैं, अब केवल मृत्यु के समय ही समारोह देखे जा सकते हैं क्योंकि मृतक के परिवार से मिलना सामाजिक और धार्मिक दायित्व है। सामाजिक विचारक और अन्य बुद्धिजीवी समाज की उन्नति को देखकर हैरान हैं जहां लोगों के पास कोई औपचारिक काम नहीं है, लेकिन वे व्यस्त हैं और उनके पास अपने सगे-संबंधियों से मिलने का समय नहीं है। हालाँकि, तालिका से पता चलता है कि आधुनिकीकरण का न केवल पारिवारिक संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, बल्कि कुछ सकारात्मक संकेतक भी हैं। लगभग 12% उत्तरदाताओं ने कहा कि इस वैश्विक दुनिया में हमें बदलती दुनिया के साथ तालमेल रखना होगा, हमें आधुनिक काल की विशेषताओं को अपनाना होगा। उत्तरदाताओं ने खुलासा किया कि पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तन औद्योगिक दुनिया के

उद्भव के कारण हुआ है और इसमें विभिन्न लोग रोजगार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले गए और समय के साथ वे वहीं बस गए, बच्चों और जीवनसाथी के साथ अपना परिवार बसाया। संचार के आधुनिक साधनों ने ऐसे व्यक्तियों को घर पर अपने रिश्तेदारों के संपर्क में रहने में मदद की है। भाइयों के बीच परिवार का विभाजन करके एकल परिवारों में बदलना नकारात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता उपरोक्त तालिका से पता चला कि आधुनिकीकरण का प्रभाव परिवार प्रणाली में सदस्य के व्यवहार पैटर्न में परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है।

शोध के दौरान यह बात भी सामने आई कि पहले अधिकतर परिवार बड़े होते थे, लेकिन वर्तमान समय में परिवार का आकार तेजी से बदल रहा है। नीचे दी गई तालिका में गांव समुदाय की पारिवारिक संरचना और आकार को दर्शाया गया है।

तालिका 6. ग्राम समुदाय में परिवार की प्रकृति और आकार

क्रम सं.	परिवार का स्वरूप	परिवार का आकार	प्रतिशत
1	नाभिकीय	छोटे (01-07 सदस्य)	73
2	संयुक्त	बड़ा (7 सदस्यों से अधिक)	27
3		कुल	100

उपर्युक्त तालिका से पता चलता है कि लगभग 73 प्रतिशत परिवार 7 सदस्यों से कम वाले छोटे परिवार अर्थात् एकल परिवार से संबंधित हैं और 27 प्रतिशत परिवार बड़े आकार के हैं और संयुक्त परिवार प्रणाली की श्रेणी में आते हैं।

बदलते परिदृश्य में परिवार के अधिकार और निर्णय लेने के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति नीचे दी गई तालिका में प्रदर्शित होती है:

तालिका 7. बदलते परिदृश्य में परिवार-प्राधिकार और निर्णय-निर्माण के संबंध में प्रवृत्ति

क्रम सं.	निर्णय की प्रकृति	केवल पति	केवल पत्नी	पति-पत्नी दोनों	प्रतिशत
1	बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णय	(27)	(11)	(62)	100
2	पारिवारिक व्यय संबंधी निर्णय	(26)	(17)	(57)	100
3	के व्यावसायिक भविष्य के बारे में निर्णय परिवार के युवा सदस्य	(33)	(09)	(58)	100
4	कृषि-कार्य के संबंध में निर्णय	(31)	(14)	(55)	100
5	विवाह के संबंध में निर्णय	(29)	(21)	(50)	100
6	अतिथियों के आगमन के संबंध में निर्णय	(34)	(15)	(51)	100
7	संपत्ति से संबंधित निर्णय - मकान खरीदना/घर बनाना आदि।	(36)	(14)	(50)	100

तालिका क्रमांक 2 से पता चलता है कि परिवार में बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णय लेने की प्रवृत्ति है। 27 प्रतिशत निर्णय केवल पति लेंगे, 11 प्रतिशत निर्णय केवल पत्नियां लेंगी तथा 62 प्रतिशत निर्णय पति और पत्नी दोनों लेंगे। परिवार के खर्च से संबंधित निर्णय 26 प्रतिशत केवल पति, 17 प्रतिशत केवल पत्नियां तथा 57 प्रतिशत निर्णय पति और पत्नी दोनों लेंगे। परिवार के युवा सदस्यों के पेशेवर भविष्य के बारे में निर्णय 33 प्रतिशत केवल पति, 09 प्रतिशत केवल पत्नियां तथा 58 प्रतिशत दोनों पति और पत्नियां लेंगे। कृषि-कार्य से संबंधित निर्णय 31 प्रतिशत केवल पति, 14 प्रतिशत केवल पत्नियां तथा 55 प्रतिशत दोनों पति और पत्नी लेंगे। विवाह से संबंधित निर्णय 29 प्रतिशत केवल पति, 21 प्रतिशत केवल पत्नियां तथा 55 प्रतिशत दोनों पति और पत्नियां लेंगे। मेहमानों के आगमन से संबंधित निर्णय 34 प्रतिशत पति, 15 प्रतिशत

पत्नियां तथा 51 प्रतिशत दोनों पति और पत्नियां लेंगे। संपत्ति खरीदने/मकान बनाने आदि से संबंधित निर्णय 36 प्रतिशत केवल पति, 14 प्रतिशत केवल पत्नियां तथा 50 प्रतिशत पति-पत्नी दोनों लेंगे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का निष्कर्ष है कि ग्राम समुदाय में अनेक परिवर्तन देखने को मिले हैं और यह वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण हुआ है। लेकिन यह परिवर्तन मुख्य रूप से उनके पारिवारिक ढांचे में आए सीमित परिवर्तनों के रूप में हुआ है। यह परिवर्तन मुख्य रूप से पारिवारिक ढांचे के दोनों पहलुओं से संबंधित है, लेकिन परिवर्तन का कार्यात्मक पहलू सीमित रूप में प्रदर्शित हुआ है। इस समुदाय ने न तो अपनी पारंपरिक प्रथाओं को पूरी तरह से त्यागा है और न ही पारिवारिक ढांचे के संबंध में आधुनिकीकरण को पूरी तरह से स्वीकार किया है। सामाजिक कार्यप्रणाली वैश्वीकरण और पारिवारिक मूल्यों की पृष्ठभूमि के बीच संचालित होती है। यह भी दर्शाता है कि आधुनिक परिदृश्य में पारिवारिक ढांचा अपनी पारंपरिक सामूहिकता का पालन करने में असमर्थ रहा है, लेकिन फिर भी, पारंपरिकता की बुनियादी विशेषताएं मौजूद हैं और इसने परिवार को एकजुट और एक रखा है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि पारंपरिक मूल्य धीरे-धीरे अपना महत्व खो रहे हैं और उनका स्थान आधुनिक मूल्यों ने ले लिया है। परिणामस्वरूप, वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण समुदाय अपने पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन के लिए प्रवृत्त है जिसे समाज का संक्रमणकालीन चरण भी कहा जा सकता है। परिवार की संस्था समाज की अन्य संस्थाओं में परिवर्तन के साथ बदल रही है। अतीत में, सिद्धार्थनगरी समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रमुख थी, लेकिन पिछले तीन दशकों ने एकल परिवार को इस पारंपरिक प्रणाली को ओवरलैप करने में मदद की है। संयुक्त से एकल परिवार में बदलाव हालांकि संस्कृति, आधुनिकीकरण, शिक्षा, मूल्यों और अन्य सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक विकास जैसे कई कारकों पर निर्भर करता है। सिद्धार्थनगर में, अधिकांश परिवार एक परिवार के भीतर घरेलू संघर्षों के कारण अलग हो गए क्योंकि बहुओं की संख्या में वृद्धि के कारण अलगाव की संभावना अधिक है। हालांकि, संयुक्त परिवार अभी भी प्रचलित है और वैश्वीकरण के इस युग में जीवित है। सिद्धार्थनगर में लोगों का अभी भी मानना है कि संयुक्त परिवार आर्थिक संरचना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मुस्लिम बहुल क्षेत्र होने

के कारण, इस्लामी शिक्षाओं ने भी संयुक्त परिवार को टिके रहने में मदद की है।

संदर्भ

1. रानी, पूजा और कौर, अमन. (2023). भारत में बदलती पारिवारिक संस्था. 10.36537/IJASS10.5&6/341-350.
2. गोपालकृष्णन, करुणानिधि. (2021). भारत में परिवार व्यवस्था का बदलता परिदृश्य: बदलते सामाजिक मूल्यों की पृष्ठभूमि में विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज. 10. 10.46852/2249-6637.01.2021.7.
3. एस.पी., राजीव. (2019). भारत में बदलते परिवार और सामाजिक कार्य प्रतिक्रियाएँ. जर्नल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन एंड प्रैक्टिस. 4. 17-24.
4. भसीन, हिमानी. (2016). आधुनिक समय में पारिवारिक संरचना में बदलाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी. 3. 10.25215/0304.169.
5. शेइदु अब्दुलकरीम, हारुना और बाबा, यूसुफ. (2022). अध्याय तीन परिवार और राष्ट्रीय विकास का समाजशास्त्र.
6. दोशी, एस.एल. 2002. आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता और नव-समाजशास्त्रीय सिद्धांत। जयपुर और नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
7. गिडेंस, एंथनी. 1990. आधुनिकता के परिणाम. कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस.
8. गुड, डब्ल्यू.जे. और हैट. पी.के. 1983. - सामाजिक अनुसंधान में विधियाँ. ऑकलैंड: मैकगॉ हिल इंटरनेशनल.
9. गोर, एम.एस. 1968. भारत में शहरीकरण और पारिवारिक परिवर्तन. बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन.
10. जैन, शोभिता. 2002. भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी। जयपुर: रावत पब्लिकेशंस.

Corresponding Author

Daya Shankar*

Assistant Professor, Ratan Sen Degree College,
Siddharth University Kapilavastu Siddharth Nagar.U.P,
India

Email: pdayashankar848@gmail.com